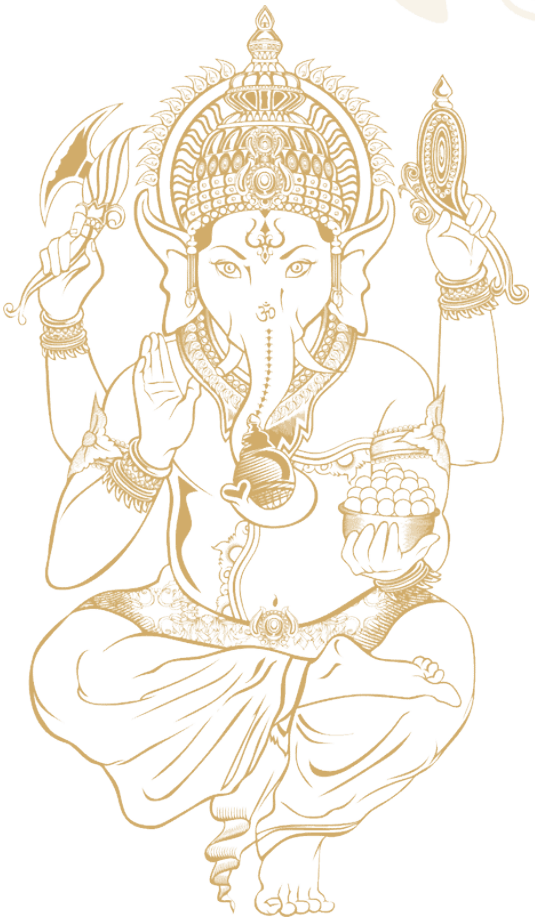

Suman patni

03 Apr 2026

12:04 PM

Ranchi

Model: Baby-Horoscope **Order No: 121876601**

तिथि 03/04/2026 **समय** 12:04:00 **वार** शुक्रवार **स्थान** Ranchi **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:13:32
अक्षांश 23:22:00 उत्तर **रेखांश** 85:20:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** 00:11:20 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	01:01:46 घं
वेलान्तर	00:03:19 घं
सूर्योदय	05:39:33 घं
सूर्यास्त	18:04:50 घं
चैत्रादि संवत	2083
शक संवत	1948
मास	वैशाख
पक्ष	कृष्ण
तिथि	2
नक्षत्र	चित्रा
योग	व्याघात
करण	तैतिल

अवकहड़ा चक्र

गण	राक्षस
योनि	व्याघ्र
नाड़ी	मध्य
वर्ण	शूद्र
वश्य	मानव
वर्ग	मृग
युँजा	मध्य
हंसक	वायु
जन्म नामाक्षर	रा-राखी
पाया(रा.-न.)	रजत-रजत
होरा	सूर्य
चौघड़िया	शुभ

विंशोत्तरी

मंगल 1वर्ष 11मा 24दि

मंगल

03/04/2026
28/03/2028

	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	03/04/2026
शुक्र	22/04/2027
सूर्य	28/08/2027
चन्द्र	28/03/2028

योगिनी

मंगला 0वर्ष 3मा 12दि

मंगला

03/04/2026
16/07/2026

	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	03/04/2026
सिद्धा	25/04/2026
संकटा	16/07/2026

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			29:07:42	मिथु	पुनर्वसु	3	गुरु	सूर्य	---	0:00			
सूर्य			19:17:34	मीन	रेवती	1	बुध	केतु	मित्र राशि	2.13	भ्रातृ	पितृ	प्रत्यारि
चंद्र			02:53:14	तुला	चित्रा	3	मंगल	शुक्र	सम राशि	0.98	ज्ञाति	मातृ	जन्म
मंगल		अ	00:40:13	मीन	पू०भाद्रपद	4	गुरु	मंगल	मित्र राशि	1.18	कलत्र	भ्रातृ	विपत
बुध			21:31:41	कुंभ	पू०भाद्रपद	1	गुरु	गुरु	सम राशि	0.95	अमात्य	ज्ञाति	विपत
गुरु			21:42:39	मिथु	पुनर्वसु	1	गुरु	गुरु	शत्रु राशि	1.51	आत्मा	धन	विपत
शुक्र			10:12:50	मेष	अश्विनी	4	केतु	शनि	सम राशि	1.50	पुत्र	कलत्र	साधक
शनि		अ	11:36:17	मीन	उ०भाद्रपद	3	शनि	चंद्र	सम राशि	0.89	मातृ	आयु	क्षेम
राहु	व		14:22:28	कुंभ	शतभिषा	3	राहु	बुध	मित्र राशि		---	ज्ञान	सम्पत
केतु	व		14:22:28	सिंह	पू०फाल्गुनी	1	शुक्र	शुक्र	शत्रु राशि		---	मोक्ष	वध

लग्न-चलित

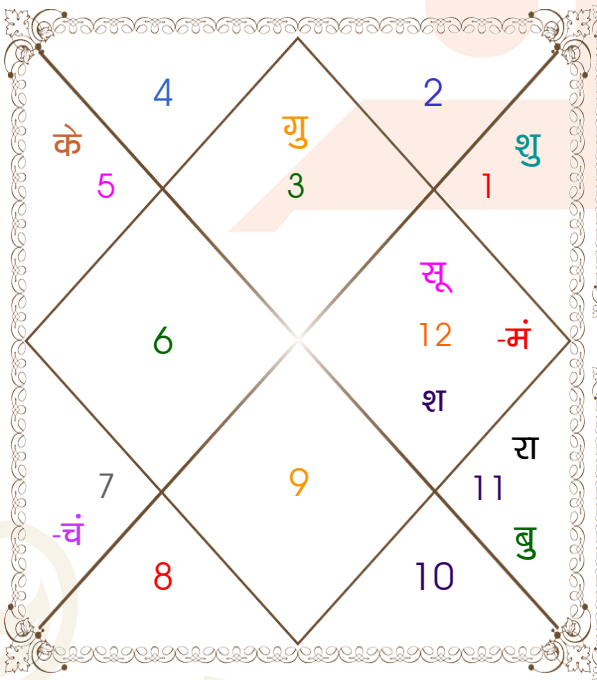

चन्द्र कुंडली

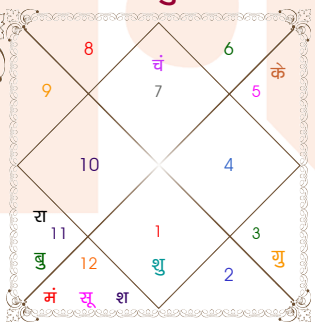

नवमांश कुंडली

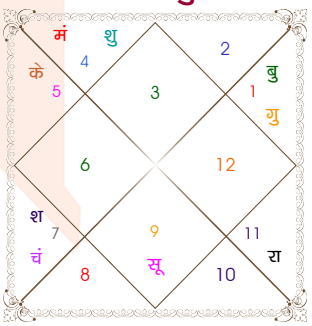

सर्वाष्टकवर्ग

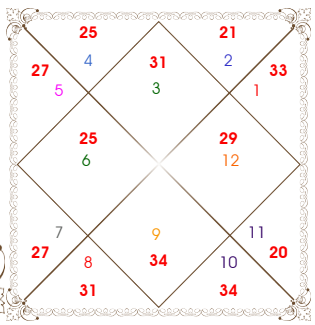

दशमांश कुंडली

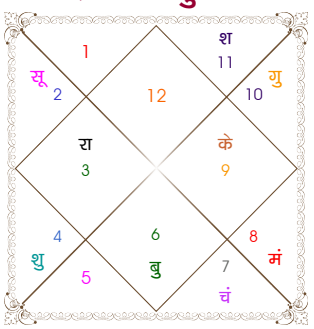

नक्षत्रफल

आप चित्रा नक्षत्र के तृतीय चरण में पैदा हुई है। अतः आपकी जन्मराशि तुला तथा राशि स्वामी शुक्र होगा। नक्षत्रानुसार आपकी योनि व्याघ्र, वर्ण शूद्र, वर्ग मृग, गण राक्षस तथा नाड़ी मध्य होगी। नक्षत्र के चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रारम्भ "र" या "रा" अक्षर से होगा। यथा रश्मि, रानी आदि

आपकी प्रवृति नैसर्गिक रूप से धार्मिक होगी तथा देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा एवं सम्मान का भाव सर्वथा विद्यमान रहेगा तथा समय समय पर श्रद्धापूर्वक आप इनका पूजन एवं सम्मान करती रहेंगी। आप सपरिवार हमेशा अल्प उपलब्धि में संतुष्ट रहेंगी। अनावश्यक इच्छाएं तथा आवश्यकताओं पर आप पूर्ण रूप से नियंत्रण रख सकेंगी। धनैश्वर्य एवं धान्यादि का आपके पास अभाव नहीं रहेगा तथा इनसे आप हमेशा सुसम्पन्न रहेंगी तथा सुख पूर्वक इनका उपभोग करके सपरिवार जीवन यापन करेंगी।

पुत्रदारयुतसंतुष्टो धनधान्य समन्वितः।
देव ब्राह्मण भक्तश्च चित्रायां जायते नरः।।
मानसागरी

अर्थात चित्रा नक्षत्र में उत्पन्न जातक स्त्री तथा पुत्र सहित सन्तुष्ट रहने वाला, धनधान्यादि से परिपूर्ण रहने वाला तथा देवता एवं ब्राह्मणों का भक्त होता है।

आप हमेशा नवीन वस्त्रों को धारण करने के प्रति प्रबल मात्रा में रूचिशील रहेंगी तथा गले में माला इत्यादि आभूषणों के प्रति भी आपका प्रेम रहेगा। आपकी आंखे अत्यन्त ही सुन्दर होंगी तथा शारीरिक सौन्दर्य भी दर्शनीय एवं आकर्षक रहेगा।

चित्राम्बर माल्यधरः सुलोचनाङ्गश्च भवति चित्रायाम्।।
बृहज्जातकम्

अर्थात् चित्रा नक्षत्र में उत्पन्न जातक अनेक वस्त्र एवं मालाओं को धारण करने वाला, सुन्दर नेत्र तथा सुन्दर शरीर वाला होता है।

आपके अपने मन के गुप्त भेदों को अपने तक ही सीमित रखने में सर्वथा समर्थ रहेंगी तथा किसी अन्य व्यक्ति को कभी भी अपने मन की बातों को नहीं बताएंगी। इस प्रकृति से आप आजीवन युक्त रहेंगी। आप अपने समाज में एक आदरणीया तथा सम्माननीया होंगी तथा समाज में आपका पूर्ण प्रभाव रहेगा लेकिन अन्य जनों से भी आपके घनिष्ठ एवं मित्रतापूर्ण संबंध रहेंगे तथा सबके प्रति आपके मन में पूर्ण अनुराग रहेगा।

चित्रायामति गुप्तशीलनिरतो मानी परस्त्रीरतः।।
जातकपरिजातः

अर्थात चित्रा नक्षत्र में उत्पन्न जातक अपने मन की बात को गुप्त रखने वाला तथा दूसरे पर प्रकट न करने वाला ऐसे स्वभाव से युक्त, सम्माननीय तथा दूसरे की स्त्रियों में अनुरक्त रहता है।

आप अत्यन्त ही पराक्रमी तथा साहसी महिला होंगी तथा अपने शत्रुओं को पराजित करने एवं कुचलने में पूर्ण रूप से समर्थ रहेंगी। आपका कोई भी शत्रु प्रत्यक्ष रूप से मुकाबला करने का कभी भी साहस नही कर पाएंगा। नीति शास्त्र का आपको विषद् ज्ञान रहेगा तथा नीति संबंधी सभी कार्यो में आप निपुण रहेंगी। आपकी रूचि नाना प्रकार के विचित्र वेशभूषा धारण करने के लिए भी उत्सुक रहेगी। शास्त्रों के प्रति आप पूर्ण श्रद्धावान रहेंगी तथा परिश्रम पूर्वक शास्त्र ज्ञान में अपनी बुद्धि का परिचय देगी।

प्रतापसन्तापितशत्रुपक्षो नयेळतिदक्ष विचित्रवासः।
प्रसूतिकाले यदि यस्य चित्रा बुद्धिविचित्रा खलुतस्य शास्त्रे।।
जातकाभरणम्

अर्थात् चित्रा नक्षत्र में उत्पन्न मानव अपने प्रताप के द्वारा शत्रु को कष्ट पहुँचाने वाला, नीति शास्त्र में दक्ष, नाना प्रकार के वस्त्रों को धारण करने वाला तथा शास्त्रादि में अद्भुत बुद्धिवाला होता है।

रजत पाद में जन्म होने के कारण आपकी शारीरिक सुन्दरता दर्शनीय रहेगी तथा इसमें पूर्ण कोमलता तथा कान्ति भी विराजमान रहेगी। आपकी मुखाकृति अत्यन्त ही सुन्दर एवं आकर्षक रहेगी। आपका इन्द्रियों पर पूर्ण नियंत्रण रहेगा तथा अनावश्यक इच्छाओं का आप में सर्वथा अभाव रहेगा। सत्य के प्रति आपकी पूर्ण निष्ठा रहेगी तथा प्रयत्न पूर्वक इसका पालन करती रहेंगी आपकी गति मधुर एवं आकर्षक रहेगी। जीवन में धन सम्पति तथा पुत्र से आप सुसम्पन्न तथा प्रसन्न रहेंगी। आपके पति पूर्ण रूप से आपका सम्मान करेंगे एवं अधिकांशतया मुख्य कार्यों को आपके कथनानुसार ही सम्पन्न करेंगे। आप सुशील एवं विन्रम स्वभाव की महिला होंगी तथा धन संचय के प्रति भी आप पूर्ण रूप से यत्नशील रहेंगी। जीवन में समस्त सुखसंसाधनों को अर्जित करने में आप सफल रहेंगी तथा सुखपूर्वक इनका उपभोग भी करेंगी। इसके अतिरिक्त विभिन्न प्रकार के धनैश्वर्य से भी आप सम्पन्न रहेंगी। साथ ही आप एक बुद्धिमती महिला होंगी तथा अधिकांश सद्गुणों से सम्पन्न रहेंगी।

तुला राशि में उत्पन्न होने के कारण आप शारीरिक सरंचना की दृष्टि से पतली होंगी तथा मुखमंडल भी पतला होगा। आपकी आंखे सुन्दर एवं बड़ी बड़ी होंगी तथा नाक ऊँची होगी। आपके पास वाहन प्रर्याप्त मात्रा में उपलब्ध रहेंगे तथा अन्य सामाजिक पुरूषों से भी आपके संबंध रहेंगे। वाहन के अतिरिक्त भूमि से भी आप बलशाली रहेंगे तथा इनसे आपको पूर्ण लाभ प्राप्त रहेगा। आपके पराक्रम को समाज में सभी वर्ग के लोग स्वीकार करेंगे तथा आपको हार्दिक मान तथा आदर प्रदान करेंगे। धनैश्वर्य तथा वैभवादि से भी आप हमेशा सुसम्पन्न रहेंगी इनकी न्यूनता की आपको कभी भी अनुभूति नहीं होगी साथ ही पति को अपने वश में करने में आप पूर्ण सफल रहेंगी। क्रियाशीलता की आपमें बहुलता रहेंगी तथा कई कार्यो की आप अच्छी

ज्ञाता भी होंगी। देवताओं तथा ब्राहमणों की भी आप भक्त होंगी। आपकी प्रवृति धन इत्यादि के संग्रह में भी रहेगी तथा बन्धु वर्ग को भी आप पूर्ण रूप से सहायता तथा सहयोग प्रदान करेंगी।

उन्नासो व्यायताक्षः कृशवदनतनुर्भूरिदारो वृषाढ्यो।
गो भूम्यः शौचकरो वृषसमवृषणो विक्रमज्ञः क्रियेशः।।
भक्तो देवद्विजानां बहुविभवयुतः स्त्रीजितो हीनदेहो।
धान्यादानैकबुद्धिस्तुलिनि शशधरे बन्धुवर्गोपकारी।।
सारावली

आप सज्जनों तथा समाज की सम्मानपूर्वक सेवा कार्य करती रहेंगी। आप विदुषी होंगी तथा पवित्रता पूर्ण जीवन का निर्वाह करेंगी। आप का अधिकांश समय भ्रमण एवं यात्रादि करने में ही व्यतीत होगा। साथ ही वस्तुओं को खरीदने तथा बेचने का कार्य अर्थात् व्यापार में आप हमेशा निपुण एवं सफल रहेंगी। आप समय समय पर कई प्रकार की बाधाओं से भी व्याकुलता प्राप्त करेंगी। आप अपने समस्त सम्बन्धियों तथा बन्धुवर्ग की यत्न पूर्वक भलाई करेंगी तथा उन्हें समयानुसार पूर्ण सहायता देंगी। परन्तु उन्हीं से बाद में आपको अपयश भी प्राप्त होगा।

देवब्राहमणसाधुपूजनरतः प्राज्ञः शुचिः स्त्रीजितः।
प्रांशुश्चोन्नतनासिका कृशचलदगात्रो डटनोडर्थान्वितः।।
हीनाङ्गः क्रयविक्रयेषु कुशलो देवद्विनामा सरूक्।
बन्धूनामुपकारकृद्वि रूषतस्त्यक्तस्तु तैः सप्तमे।।
बृहज्जातकम्

आप एक धैर्यशाली महिला होंगी तथा अपने समस्त कार्यो को धैर्यपूर्वक ही सम्पन्न करेंगी। शीघ्रता से कार्य करना आपकी प्रवृति के प्रतिकूल होगा। न्याय में आपकी पूर्ण आस्था रहेंगी तथा स्वयं भी न्यायप्रिय होंगी तथा निष्पक्ष रूप से अपनी बातों को अन्यों के समक्ष प्रस्तुत करेंगी। अतः लोग आकर आपसे पंच या मध्यस्थ का अनुरोध करेंगे जिसका आप निपुणता से निर्वाह करेंगी। साथ ही आपकी संतति संख्या अल्प होगी एवं भाग्योदय भी देर से होगा।

चलत्कृशाङ्गो डुतोडतभक्तो देवद्विजानामटनोद्विनामा।
प्रांशुश्च दक्षः क्रयविक्रयेषु धीरो डदयस्तौलिनि मध्यवादी।।
फलदीपिका

आपका शारीरिक कद मध्यम होगा। सरकार के उच्चपदाधिकारियों तथा अधिकारियों को प्रसन्न करने में आप हमेशा निपुण रहेंगी तथा इनसे पूर्ण आदर तथा सहयोग प्राप्त करेंगी साथ ही बंधुवर्ग को कुछ न कुछ सहयोग अवश्य प्रदान करती रहेंगी लेकिन आपका स्वभाव अधिक बोलने वाला भी होगा जिसका अन्य जनों पर विपरीत प्रभाव पड़ेगा। ज्योतिष अथवा ग्रह नक्षत्र संबंधी शास्त्रों में आपकी रूचि रहेंगी तथा इसकी आप एक श्रेष्ठ विदुषी होंगी। बन्धु तथा सेवकों के प्रति भी आपके मन में प्रशंसनीय अनुराग रहेगा

भवति शिथिलगात्रो नातिदीर्घो न खर्वी।
जनपति परितोषी बान्धवेभ्यः प्रदाता।।
अतिशय बहुभाषी ज्योतिषां ज्ञान युक्तो।
भवति सः तुलाराशि बन्धुभृत्यानुरागी।।
जातक दीपिका

जीवन में आप प्रायः असमय पर क्रोध करने वाली होंगी तथा इससे समय समय पर आप दुःख की भी अनुभूति करती रहेंगी। आपकी वाणी अत्यन्त ही प्रिय एवं मधुर होगी जिससे अन्य जन आपसे हमेशा प्रभावित रहेंगे। आपकी आंखो में भी चंचलता हमेशा विद्यमान रहेगी परन्तु आर्थिक स्थिति आपकी उतार चढ़ाव से युक्त रहेगी। आप घर के अन्दर अत्यन्त शक्ति शाली होंगी परन्तु घर से बाहर दुर्बलता की अनुभूति करेंगी। व्यापार में आप हमेशा सलंग्न रहेंगी तथा मित्र वर्ग से हमेशा आप विशेष स्नेह तथा आदर का भाव प्रदर्शित करेंगी जिससे मित्रवर्ग आप पर पूर्ण श्रद्धा तथा विश्वास रखेगा। इसके अतिरिक्त आप घर से बाहर विदेश या परदेश में भी निवास करेंगी।

अस्थानरोषणो दुःखी मृदुभाषी कृपान्वितः।
चलाक्षश्चललक्ष्मीको गृहमध्येळति विक्रमः।।
वाणिज्य दक्षो देवानां पूजको मित्रवत्सलः।
प्रवासी सुहृदयमिष्टस्तुला जातो भवेन्नरः।।
मानसागरी

जीवन में आप वाहनादि से हमेशा सुशोभित रहेंगी। आपके पास धन वैभव प्रचुर मात्रा में सर्वदा विद्यमान रहेगा। इसके अतिरिक्त मित्र वर्ग से भी आपका स्नेह भाव रहेगा।

वृषतुरंग विक्रमविक्रमनद्विजसुरार्चनदानमना पुभान्।
शशिनि तौलिगते बहुदारभाग्विभवसंभव संचित विक्रमः।।
जातकाभरणम्

राक्षस गण में उत्पन्न होने के कारण आपकी प्रवृति यदा कदा व्यर्थ बोलने की अधिक रहेगी तथा मन में दया एवं करूणा का भाव की भी न्यूनता रहेगी। आप एक साहसी महिला होंगी तथा साहसिक कार्यो को सम्पन्न करने की तरफ आपकी प्रवृति अधिक मात्रा में होगी। कभी कभी आप छोटी छोटी बातों में शीघ्र ही क्रोधित भी हो जायेंगी। अपने कार्य की सिद्धि के लिए आप किसी भी कार्य को करने के लिल भी सदैव तत्पर रहेंगी। शरीर से आप स्वस्थ तथा बलवान रहेंगी तथा अधिकांश लोगों से विवाद करेंगी जिससे इन कार्यो से आपका वैमनस्य भाव अन्य जनों से बढ़ता रहेगा। अतः संयम एवं नम्रतापूर्वक अन्य जनों से आपको व्यवहार करना चाहिए।

आप अपने जीवन काल में उन्माद तथा प्रमेह रोग से भी पीड़ित हो सकती है। आपकी मुखाकृति भी सुन्दर रहेगी तथा आपकी वाणी कभी कभी कटुता को धारण करेगी जिससे श्रोता कष्ट का अनुभव करेंगे। अतः यत्नपूर्वक अपने सम्भाषण में मधुरता का समावेश करना

चाहिए।

अनल्पजल्पश्च कठोरचित्तः स्यात्साहसी क्रोधपरोद्धतश्च।
दुःशीलवृतः कलीकृत्वलीमान रक्षोगणोत्पन्नरो विरोधी।।
जातकभरणम्

अर्थात् राक्षस गण में उत्पन्न जातक व्यर्थ बोलने वाला, कठोर, साहसी, अकारण ही क्रोधित होने वाला, नीच प्रकृति से युक्त, झगड़ू, बलवान तथा अन्य लोगों का विरोधी होता है।

व्याघ्र योनि में जन्म लेने के कारण आप स्वतंत्रता प्रिय होंगी तथा स्वतंत्रतापूर्वक ही अपने समस्त कार्यों को सम्पन्न करने की इच्छा रखेंगी। इसमें किसी भी बाहरी दवाब या हस्तक्षेप को आप पसन्द नहीं करेंगी। धनैश्वर्य तथा वैभव से आप हमेशा सुसम्पन्न रहेंगी तथा इसका आपको कभी भी अभाव नही होगा। धन को एकत्रित करने की भी आपकी प्रवृति होगी तथा गुणों एवं अच्छी बातों को आप शीघ्र ही ग्रहण करने वाली होंगी। अपने कार्य क्षेत्र में आप एक प्रशिक्षित महिला होगी अतः सभी लोगों का आपके प्रति सम्मान का भाव विद्यमान रहेगा। परन्तु कभी कभी आप अपने ही मुख से अपनी प्रशंसा करने वाली होंगी अतः अन्य लोगों पर इसका प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। जो आपके लिए अच्छा नहीं रहेगा।

स्वच्छन्दोऽर्थरतो ग्राही दीक्षावान सः विभुः सदा।
आत्मस्तुतिपरो नित्यं व्याघ्रयोनि भवो नरः।।
मानसागरी

अर्थात् व्याघ्र योनि में उत्पन्न जातक स्वतंत्र प्रवृति वाला, अर्थसंग्रह में तत्पर, गुणों को ग्रहण करने वाला, दीक्षित, वैभव युक्त तथा अपने ही मुख से स्वयं अपनी प्रशंसा करने वाला होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा पंचम भाव में स्थित है। अतः आप माता की परम प्रिय रहेंगी। उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं आयु भी लम्बी होगी। धन धान्य से वे सर्वदा युक्त रहेंगी तथा जीवन में आपको प्रत्येक क्षेत्र में अपना सहयोग प्रदान करेंगी। साथ ही कला, नीति, विद्या आदि में भी आपको नित्य प्रोत्साहित करती रहेंगी एवं इनकी वृद्धि में उनका मुख्य सहयोग रहेगा। वे स्वभाव से भी अत्यन्त सुशील होंगी तथा आपको नित्य अच्छी शिक्षाएं देती रहेंगी।

आप की भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञापालन के लिए नित्य तत्पर रहेंगी। जीवन में उनकी सेवा करना अपना कर्तव्य समझेंगी तथा अवसरानुकूल उनको वांछित आर्थिक या अन्य प्रकार से सहयोग एवं सहायता प्रदान करेंगी। आपके संबंध मधुर रहेंगे तथा किसी भी प्रकार से आपकी मतभेद नहीं रहेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य दशम भाव में स्थित है अतः पिता की आप प्रिय रहेंगी। उनका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं आयु भी पूर्ण रहेगी। धनैश्वर्य से वे सुसम्पन्न

रहेंगे एवं जीवन में आपको पूर्ण रूप से आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे। इसके साथ ही आपके आजीविका या व्यापार संबंधी कार्य भी उन्हीं की प्रेरणा एवं सहायता से सम्पन्न होंगे एवं आप इन कार्यों में वांछित सफलता अर्जित कर सकेंगी।

आप भी उनका पूर्ण हार्दिक सम्मान करेंगी एवं उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध प्रायः मधुर ही रहेंगे तथापि यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे। जीवन में आप पिता को अपनी ओर से पूर्ण आर्थिक सहायता प्रदान करेंगी एवं सुख दुःख में सर्वदा उनका सहयोग करेंगी।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति दशम भाव में है अतः आपके भाई बहिनों का शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा उनमें शारीरिक दुर्बलता भी परिलक्षित होगी। आपके प्रति उनके मन में स्नेह तथा सम्मान का भाव रहेगा एवं धन सम्पत्ति से भी वे युक्त रहेंगे एवं जीवन के समस्त महत्वपूर्ण कार्य की सिद्धि में आपको अपना सहयोग प्रदान करेंगे। इसके अतिरिक्त सुख दुःख में भी वे आपके साथ रहेंगे। तथा नौकरी या व्यापारादि में आपका सहयोग करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति स्नेह का भाव रहेगा एवं आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी। लेकिन कभी कभी आपसी मतभेदों के कारण इसमें कटुता भी आएगी लेकिन यह अल्प समय तक रहेगी। साथ ही आप उनकी आजीविका संबंधी कार्यों में में यथाशक्ति आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहायता प्रदान करती रहेंगी।

आपके लिए माघ मास, चतुर्थी, नवमी, चतुर्दशी तिथियां, शतमिषा नक्षत्र, शुक्ल योग, तैतिलकरण, गुरूवार चतुर्थ प्रहर तथा मीन राशिस्थ चन्द्रमा अशुभ फल प्रदान करने वाले होंगे। अतः आप 15 जनवरी से 14 फरवरी के मध्य 4,9,14 तिथियों, शतमिषा नक्षत्र, शुक्ल योग तथा तैतिलकरण में कोई भी शुभकार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रय विक्रयादि अन्य शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को प्रारम्भ न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही गुरूवार चतुर्थ प्रहर तथा मीन राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यो में वर्जित रखे। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा एवं स्वास्थ्य का भी विशेष ध्यान रखें।

यदि आपके लिए समय अनुकूल न चल रहा हो मानसिक अशान्ति शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी प्राप्ति या पदोन्नति में बाधा या अन्य शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में असफलता प्राप्त हो रही हों तो ऐसे समय में आपको अपनी इष्ट देवी लक्ष्मी की उपासना करनी चाहिए तथा शुक्रवार के उपवास भी करने चाहिए साथ ही सोना, चांदी, हीरा, चावल, श्वेत वस्त्र, श्वेत चन्दन, दूध आदि का भी श्रद्धापूर्वक दान करना चाहिए ऐसा करने से आपको मन की शान्ति मिलेगी तथा अशुभ फलों में न्यूनता आएगी। इसके अतिरिक्त शुक्र के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 20000 जप किसी योग्य विद्वान स, सम्पन्न करवाने चाहिए। इससे आपके लाभमार्ग प्रशस्त होंगे।

ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः।
मंत्र- ॐ ह्रीं श्रीं शुक्राय नमः।